**E-ISSN:** 2706-8927
**P-ISSN:** 2706-8919
**Impact Factor:** RJIF 5.12
IJAAS 2020; 2(1): 291-293
Received: 23-11-2019
Accepted: 26-12-2019

**नीतू कुमारी**
शोध प्रज्ञा, विश्वविद्यालय हिन्दी–विभाग, ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

**Corresponding Author:**
**नीतू कुमारी**
शोध प्रज्ञा, विश्वविद्यालय हिन्दी–विभाग, ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

# रॉबिन शॉ पुष्प की कहानियों के प्रमुख स्वर

## नीतू कुमारी

**सारांश**
बिहार के समकालीन कथाकरों में रॉबिन शॉ पुष्प एक बहुचर्चित हस्ताक्षर हैं। 'प्रतिद्वन्द्वी' कहानी से अपनी कथायात्रा आरम्भ करनेवाले पुष्प जी ने अपने व्यक्तिगत जीवन में किसी से प्रतिद्वन्द्विता नहीं की, अपितु सदैव अपने समकालीन युवा कथाकारों को आत्मीयतापूर्वक सहयोग करते रहे। साहित्य–सेवा को ही अपने जीवन–यापन का साधन बनानेवाले कहानीकार के रूप में पुष्पजी ने मानवीय मूल्यों और संवेदनाओं को पुनर्स्थापित करने का पुरजोर प्रयास किया एवं मानवीय गरिमा को क्षरित करनेवाले तत्त्वों को हतोत्साहित कर मानवता का कल्याण किया। नारियों की पूजा करनेवाले भारतीय समाज में नारियों के प्रति पुरुषों के दूषित सामन्ती दृष्टिकोण को इन्होंने उजागर किया, नारियों की स्थितियों, भावनाओं और आकांक्षाओं को वाणी देकर आधी आबादी के हित–चिन्तन की चेष्टा की और वर्तमान राजनीति की पतनोन्मुख अवस्था का चित्रण कर इससे त्राण पाने का संदेश भी दिया। कुल मिलाकर वर्तमान समय और समाज में स्त्रियों और पुरुषों की मानसिकता, उसकी विवशताओं और विशेषताओं– सबको पुष्प जी ने अपनी कहानियों में प्रखर स्वर प्रदान किया है।

**प्रस्तावना**
हिन्दी साहित्य के एक बहुमुखी कथाकार रॉबिन शॉ पुष्प का जन्म 20 दिसम्बर 1936 को बिहार प्रान्त के मुंगेर जिले के अन्तर्गत 'पोलो फिल्ड के शरणार्थी कैम्प में हुआ था। इनकी माता ने इनका नाम रवीन्द्रनाथ रखा था, जो अंग्रेजियत में बहकर 'रॉबिन शॉ पुष्प' हो गया।
पुष्पजी ने अपने शिक्षा–काल में ही कहानी लिखना प्रारंभ कर दिया था। इनकी पहली कहानी 'प्रतिद्वन्द्वी' जी.डी. कॉलेज से निकलने वाली पत्रिका में छपी, फिर वह मुम्बई से धर्मवीर भारती जी की पत्रिका 'धर्मयुग' में 1957 में छपी और यहाँ से 'पुष्पजी' की साहित्यिक यात्रा की शुरूआत होती है। 1957 के बाद हर साल उनकी कहानियाँ देश की सभी प्रतिष्ठित पत्र–पत्रिकाओं में जगह पाती रहीं। उनका जीवन संघर्ष से भरा रहा। मुंगेर में भी उन्होंने अपना जीवन–यापन लेखनी–श्रम से ही किया। पूरी जिंदगी इन्होंने कोई नौकरी नहीं की। 'फ्रिलांसर' के तौर पर जीवन जीया। कभी रेडियो से आनेवाला पारिश्रमिक इनके जीवन–यापन का साधन बना। इनकी माँ 'लिलिग्रेस' रवीन्द्रनाथ टैगोर की कहानियाँ पढ़कर उनकी कहानियों से प्रेरित होकर चाहती थी, कि बेटा साहित्यकार बने, 'पुष्पजी' के साहित्यकार बनने में पहले इनकी माँ और बाद में पत्नी गीता जी का पूरा–पूरा सहयोग प्राप्त हुआ।
पुष्पजी के सान्निध्य में बिहार के अनेक साहित्यकारों ने उनके आर्शीवाद से काफी कुछ सीखा है। स्मृतिशेष रॉबिन शॉ पुष्प– 'ईमानदार आस्था के रचनाकार' शीर्षक अपने आलेख में पुष्प जी के सम्बन्ध में लिखते हैं– ''मृदुल चेहरा.....बातों में वात्सल्य का भाव .....चाहे कोई भी मिलने पहुँचे वे उतना ही आत्मीयता उड़ेलते थे।'' वे हर युवा लेखक साहित्यकार के साथ वैसा ही प्रेम करते जैसे अपने बच्चों से। राजीव आनन्द आगे लिखते हैं, ''रॉबिन शॉ पुष्प का मानना था कि लेखक का काम सिर्फ लिखना नहीं अपितु समकालीन युवा पगध्वनियों की आहट को सुनना भी होता है, अपनी इसी मान्यता से प्रेरित होकर उन्होंने 'बिहार के युवा हिन्दी कथाकार', नामक पुस्तक का संपादन एवं प्रकाशन करवाया था जिसका अनुकूल प्रभाव समकालीन युवा कथाकारों पर वैसा ही पड़ा जैसा अज्ञेय द्वारा प्रकाशित 'तार सप्तक' का प्रभाव समकालीन युवा कथाकारों पर पड़ा था। [1]
रॉबिन शॉ पुष्प ने सत्तर–अस्सी के दशकों में कई रेडियो नाटक लिखे जिनमें सबसे चर्चित पुस्तक 'दर्द का सुख' रहा है, बिहारी संस्कृति को पुष्पजी ने हिन्दी कहानी में किसान–मजदूर आन्दोलन से जोड़ा है। उनकी कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह शब्द–चित्र के जरिए अपनी कहानियों में एक बेहतरीन अदा से पाठकों पर असर डालती है। उन्होंने अपनी कलम से साहित्य की अनेक विधाओं में रचना की। बहुत ही सहज भाव से अपनी कथाओं में अपनी ईमानदारी का परिचय दिया।
अवधेश प्रीत लिखते हैं– ''वाकई पुष्प जी की जिंदगी और जवान दोनों में सादगी थी। यह सादगी उनके लेखन की खासियत थी तो रिश्तों को निभाने की ईमानदारी भी थी।

पटना के 'सब्जीबाग' में उनका आवास 'रवीन्द्रांगन' देश–प्रदेश के लेखकों, पत्रकारों और कलाकारों के लिए जीवन्त पीठ था, फणीश्वरनाथ रेणु जब तक जीवित रहे, इस आवास पर पुष्प जी के साथ सुख–दुख बाँटते रहे। रेणुजी ने यहीं अपनी एक लम्बी कविता 'मेरा मीत सनीचर' सुनाई थी जिसे पुष्प जी ने तत्काल रिकार्ड कर लिया था।'' [2]

'रॉबिन शॉ पुष्प' जी मानवीय संवेदनाओं और मानवीय मूल्यों को पुनर्स्थापित करने वाले रचनाकार हैं। स्वातंत्र्योत्तर भारत में आ रहे परिवर्त्तनों का मूल्यांकन वे मानवीय गरिमा को स्थापित अथवा क्षरित करनेवाली प्रवृत्तियों के मानक पर करते हैं। पुष्प जी की कहानियाँ पाठकों की कल्पना शक्ति को अधिकाधिक विस्तार देती है, उन्हें अवसर प्रदान करती है और अव्यक्त को व्यक्त करती है। उन्होंने छोटी कहानियों के साथ कुछ बड़ी कहानियाँ भी लिखी हैं। उनकी कहानियाँ अपनी समय–सीमा में निश्चित ही छोटी या बड़ी होने से मतलब नहीं रखतीं, अपितु अपने समय का अतिक्रमण कर बदलते हुए परिवेश, वर्त्तमान संदर्भ और स्थितियों में भी उतनी ही प्रासंगिक और अनुकूल नजर आती है।

साम्प्रदायिकता–विरोध प्रगतिशील जनवादी लेखल का एक गंभीर विषय रहा है। बदलाव राजनीति से ही होता है, लेकिन रोजमर्रा की जिंदगी में साम्प्रदायिकता का विष जैसे–जैसे त्रास देता है, वह कम चिंता की बात नहीं। पुष्प जी भी इस चिन्ता से विरत नहीं हैं। पुष्प जी अपनी कहानियों में अपने सरल शब्दों और सीधे वाक्यों से कठिन से कठिन बात कहना जानते हैं। उनके पाठकों को लगता है कि उनके विचार और कथ्य इस तरह घुल–मिलकर आते हैं कि सीधे मन में ही उतर जाते हैं।

पुष्प जी की कहानी 'भूख, भूख और भूख' एक ऐसी लड़की की त्रासदी है जिसके साथ पुलिस ने बलात्कार किया है और उसे गर्भ रह गया है। माँ उसे गर्भपात कराने की सलाह देती है, ताकि उसकी दूसरी शादी कर सके, पर लड़की के मन में माँ बनने की लालसा जाग उठती है और वह गर्भपात को लेकर पीड़ित है। यह कथ्य तो संभावनाओं से पूर्ण है, पर लेखक उसके लिए विश्वसनीय पृष्ठभूमि निर्मित नहीं कर पाता है।

'पुष्पजी' द्वारा रचित कहानी 'अजनबी होता हुआ मकान' बहुआयामी जीवन संदर्भो को अपने यथार्थपरक दृष्टिकोण से उद्घाटित करती हैं। उनके पात्र और परिवेश दोनों सहज ही प्राप्त हो जाते हैं। कल्पना के आलोक से कथा बुनने की परम्परा का निषेध उनकी रचनात्मक प्रतिभा का उत्कर्ष है। तलाकशुदा स्त्री की पीड़ा का जीवंत–वृत्तांत इस कहानी में प्रस्तुत किया गया है। कहानी की नायिका इला श्रीवास्तव के बहाने किस्सागोई के माध्यम स्त्री के अंतस् में संचित अवसाद का सफल उद्घाटन कर लेखक ने पाठकों की भावना को कुरेदने का सफल प्रयास किया है। 'अतीतावलोकन' के माध्यम से रचनाकार स्पष्ट करता है कि इला का सजना–सँवरना और नुमाईश करना उसके पति को पसन्द नहीं है। विद्रोह के स्वर में इला कहती है– ''तो क्या चाहते हो? फटे–पुराने कपड़ों में कॉलेज जाया करूँ? ....औरत का जिस्म एक तिजोरी है, जिसके भीतर उसकी पवित्रता कैद होती है..... बदनामी का एक छींटा भी शरीर पर पड़ जाए तो लोग आत्मा तक को कलंकित होने का संदेह करने लगते हैं– कम से कम तुम तो मुझ पर शक मत करो।'' [3]

कहानी में यह सवाल खड़ा होता है, क्या हो जाता है प्रेमियों को पति बन जाने के बाद? वह अपनी प्रेमिका को सामाजिक–पारिवारिक और धार्मिक रूढ़ियों में कैद रहने करने को बाध्य कर देता है? शादी से पहले के प्रेम और समर्पण का गला घोंट देता है। इला और अमृत एक–दूसरे के अच्छे मित्र थे। प्रेम किया था दोनों ने, परंतु पति पत्नी होने पर अमृत, अमृत नहीं रह पाया, प्रोफेसर बन जाने के बाद भी इला की नजर में अमृत का मोल नहीं घटा,लेकिन अमृत अपने पुरुषत्व के दंभ में उसे महत्त्व नहीं देता है।

स्त्री को हमेशा एक संरक्षक पुरुष की आवश्यकता होती है, जो उसे पति के रूप में प्राप्त होता है। आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने के पश्चात् इला श्रीवास्तव अपने पति अमृत का परित्याग कर अलग मकान लेकर रहने लगती है, क्योंकि प्रोफेसर दयाल और इला के बीच के संबंध को अमृत शक की निगाह से देख रहा था। अब इला कॉलेज प्रोफेसर है, उसके पास पैसे हैं, नाम है, प्रसिद्धि है, सबकुछ है, पर चारों ओर से लोग उसे शक की निगाह से देखते हैं। शक की दो आँखों के वार से आहत इला आज हजार आँखों की शिकार हो गयी है। घर से आते–जाते आसपास की सैकड़ों आँखें उसपर टिकी रहती हैं जिनसे मुक्ति के लिए वह छटपटा जाती है।

ऐसे में से मुक्ति का मार्ग मिलता है राजीव के द्वारा जिनका मानना है कि ''अभी तुम न लड़की हो न औरत ही। किसी अजनबी देश के सिक्के की तरह हो, जिसे न तुड़ाया जा सकता है, न ही जमा ही किया जा सकता है..... बिजनेस में घाटा तो बर्दाश्त किया जा सकता है। लेकिन जिंदगी में घाटा हो तो तिजोरी तक खाली होने लगती है..... बताओ आज तुम्हारी क्या कीमत रह गयी है। [4]

रॉबिन शॉ पुष्प ने बचपन से ही नारी की व्यथा को बहुत नजदीक से देखा है। अतः उनकी लेखनी में उनकी भावनाओं का बहुत ही सटीक चित्रण हुआ है। उन्होंने नारी में पति के प्रति समर्पण की भावना, माँ की ममता और प्यार को देखा है। सन्तान पाने की लालसा में व्याकुल नारी का सजीव चित्रण भी पुष्प की कहानियों में मिलता है। उन्होंने व्यवस्था, परिस्थिति एवं सामाजिक विडम्बनाओं में बह जाने को परिवार के बिखराव और समाज के कलंक का कारण भी बताया है। इसके साथ ही उन्होंने नारी स्वच्छता का जिक्र भी किया है– ''वे चुपचाप उसका चेहरा देखने लगे थे..... और उस दिन भी चुपचाप उसे देखते रह गये थे, जब शारदा ने तलाक के कागज उनके आगे फेंककर कहा था, 'हमारे सोचने–समझने के ढंग में स्टैण्डर्ड में, बहुत अन्तर है।..... बेहतर हो, हम अलग–अलग जीयें, वैसे मैं चाहती तो तुम्हें अपमानित करके तलाक ले सकती थी.....तुम किसी काबिल नहीं। पिता बनने के काबिल भी नहीं।'' [5]

प्रत्येक औरत को माँ बनने की लालसा होती है। इसकी पूर्ति के बिना वह कुण्ठित और अपने जीवन में खालीपन महससू करती है। उसे अपना सारा जीवन वीरान लगता है नारी मन की इस अति वेगवती और संवेदनशील भावनाओं को पुष्पजी ने बड़ी स्पष्टता के साथ प्रस्तुत किया है।

रॉबिन शॉ पुष्प की कहानियों में उनके नायक–नायिकायें देश में व्याप्त पारिवारिक सामाजिक एवं राजनीतिक समस्याओं से बनी परिस्थितियों से जूझते हुए दिखाई देते हैं। अवैध संबंध से उत्पन्न पति–पत्नी के बीच दरार, मानसिक तनाव, परिवार के बिखराव के बीच जूझते हुए कुण्ठाग्रस्त तबाह व्यक्ति की मनोदशा उनकी कहानियों में उजागर हुई है। इन परिस्थितियों को समाज में बनाये रखने में कौन दोषी है? समाज की व्यवस्था? राजनीतिक व्यवस्था? या व्यक्ति की विवशता? कहानीकार तीनों परिस्थितियों की ओर संकेत करते हुए पाठकों के मन–मस्तिष्क को प्रश्नाकुल कर देता है। अपनी नवीनतम कहानी 'नरक' में कहानीकार ने आज के आराम–तलब और जनता का शोषण करनेवाले राजनीतिज्ञों पर करारा चोट की है। इसमें उन्होंने कहानी के नायक मंत्री के बेटे की अंतर–भावनाओं का यथार्थ एवं सूक्ष्म चित्रण करने में सफलता प्राप्त की है। समाज में मंत्री के बेटे के रूप में ही उसकी पहचान बनी है। इसके बाद उसका अपना कोई 'सेल्फ ऑइडेनिटटी' (निजी पहचान) नहीं है। लोगों का उनपर यह ताना कि उसका जो भी अपना व्यक्तित्व है, वह मंत्री के बेटा होने के नाते हैं। उसे हमेशा यह बात चुभती रहती है।

''वह हँसा। मैं तो महज एक कॉन्ट्रैक्टर हूँ। पर, कल आप इस केन्द्र की निर्देशिका बनेंगी। मैं कुछ भी बन जाऊँ आपसे बड़ी

नहीं हो सकती। आप तो मंत्री के बेटे हैं.....'' और बात करते समय जो सुख उसे मिल रहा था, अनायास ही उस 'सुख–पल' की हत्या हो गई। घर–बाहर, हाट–बाजार हर जगह लोग उसे मंत्री का बेटा समझते हैं। कहीं भी उसका अपना व्यक्तित्व नहीं। उसका मन रोने–रोने को हो आया। किसी तरह उसने कहा, 'कम–से–कम आप तो मुझे ऐसा मत कहिए। क्या मेरी अपनी कोई आइडेंटिटी नहीं है? [6]

वह कुण्ठित है और अपने आप से आक्रोशित। फिर अपने मंत्री, पिता के काले–कारनामे टी.वी. पर देखकर वह घर से भाग जाता है, लेकिन वह अन्तरआत्मा की टीस से छुटकारा नहीं पा सका, क्योंकि उसके पिता के जैसे मंत्रियों ने समाज के हर स्थान को नरक बना दिया है। वह घर के बाहर भाग जाता है? ''..... भागते–भागते अचानक वह रुक गया। पहली बार उसे अहसास हुआ कि देश तो आजाद होकर स्वर्ग बनने जा रहा था, किंतु उसके पिता जैसे लोगों ने इसे इतने वर्षो में नरक बना दिया है.... .....अब वह किधर जाए पीछे भी नरक, आगे भी नरक.....। [7]

## निष्कर्ष

इसमें कोई सन्देह नहीं कि पुष्प जी की कहानियों में वर्णित यथार्थ आज के परिवार, समाज, देश और राजनीति में यथावत् दृष्टिगोचर होते हैं। इसलिए ये कहानियाँ अपने लिखे जाने के समय भी प्रासंगिक थीं और आज भी प्रासंगिक हैं। पुष्प जी की कहानियाँ पाठकों के समक्ष प्रश्न खड़े करती हैं एवं उनके कारण एवं निदान की ओर सोचने को बाध्य भी करती हैं। समाज की आधी आबादी–स्त्री–की भावनाओं, आकांक्षाओं, परिस्थितियों, मनः स्थितियों और पुरुषों की सामन्ती दृष्टिकोणों को पुष्प जी की कहानियाँ मार्मिकतापूर्वक प्रस्तुत करती हैं और किसी–न–किसी प्रकार से पाठकों को इन सामाजिक विडम्बनाओं से त्राण पाने का मार्ग खोजने के लिए भी प्रेरित करती है।

## संदभ सूची


1. राजीव आनन्द का आलेख–स्मृति शेष रॉबिन शॉ पुष्पः ईमानदार आस्था के रचनाकार झारखण्ड रवि रतलामी द्वारा 12जी छवअमउइमत 2014 पोस्ट किया गया लेबल आलेख
2. अवधेशप्रित 'नहन्यते रॉबिन शॉ पुष्प : एक जीवंत लेखक' दिसम्बर 2014, पृ.–12
3. रॉबिन शॉ पुष्प रचनावली खण्ड : 2, (कहानियाँ) सम्पादन– डॉ० गीता पुष्प शॉ, प्रो० जॉयस शीला शॉ अमित प्रकाशन गाजियाबाद, दिल्ली, 'अजनबी होता हुआ मकान', 2012, पृ.–
4. वही, पृ.–33
5. रचनावली खण्डः दो 'टाईप राइटर' कहानी, पृ.–46
6. वही, 'नरक' कहानी, पृ.–68–69
7. वही, पृ.–73